Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
M. A Semester - 1 Philosophy CC-04
Indian and Western Ethics

"Moore: Naturalistic fallacies" 1
("प्रकृतिवादी दोष")

मूर ने अपनी किताब "प्रिंसिपिया एथिका" के पहले अध्याय "दि सब्जेक्ट मैटर ऑफ एथिक्स" में प्रकृतिवादी दोष की चर्चा की है। इनके अनुसार अगर दो अलग-अलग प्राकृतिक वस्तुओं को भी एक मान लिया जाए जैसे अगर कोई कहता है "मैं खड़ा हूँ" तो "मैं" और "खड़ा होना" को बिल्कुल एक ही मान लिया जाए तो भी यह भी वही दोष है जिसे नीतिशास्त्र के क्षेत्र में "प्रकृतिवादी दोष" कहा है, लेकिन यहाँ पर इस दोष को "प्रकृतिवादी" कहने का कोई कारण नहीं है। लेकिन "शुभ" को, जो कि अर्थ में प्राकृतिक वस्तु नहीं है, किसी प्राकृतिक वस्तु के साथ एक मान लिया जाए तो उसे "प्रकृतिवादी" दोष कहने का औचित्य है।

मूर ने अपनी किताब के दूसरे अध्याय "नेचुरलिस्टिक एथिक्स" में "प्रकृतिवादी दोष" से अलग नैतिक सिद्धांतों को दो वर्गों में बाँटा है। —

1. प्रकृतिवादी नीतिशास्त्र जिसमें "शुभ" की परिभाषा किसी प्राकृतिक वस्तु से जोड़ कर की जाती है।

2. तत्वमीमांसीय नीतिशास्त्र, जिसमें "शुभ" की परिभाषा किसी "अतीन्द्रिय" वस्तु से जोड़ कर की जाती है। मूर के अनुसार,

"तत्वमीमांसीय नीतिशास्त्र" में भी वही दोष है, जो "प्रकृतिवादी नीतिशास्त्र" में है, और जो वह एक को नाम देते हैं, "प्रकृतिवादी दोष"।

मूर के "प्रकृतिवादी दोष" की अवधारणा 'अच्छा' के अपरिभाष्यता से जुड़ी हुई है। इसलिए "प्रकृतिवादी दोष" की समीक्षा भी "अच्छा" की अपरिभाष्यता की समीक्षा से जुड़ी है।

अगर "प्रकृतिवादी दोष" नाम इसलिए उपयुक्त है, जैसा कि मूर स्वयं कहते हैं, क्योंकि "अच्छा" जो कि एक "गैर-प्राकृतिक" गुण है उनकी परिभाषा प्राकृतिक वस्तु के माध्यम से की जाती है तो फिर "अच्छा" के किसी "तत्वमीमांसीय" गुण या वस्तु के माध्यम ~~से भी जोड़ी है, तो फिर "अच्छा" के~~ किसी से परिभाषित किए जाने को भी "प्रकृतिवादी दोष" कहना कहाँ तक उपयुक्त है।

ऐसा लगता है कि मूर के अनुसार सबसे पहले "अच्छा" को परिभाषित करना या उसे किसी भी अन्य वस्तु के साथ बिल्कुल एक मान लेना ही एक दोष है चाहे वह वस्तु प्राकृतिक हो या गैर-प्राकृतिक या तत्वमीमांसीय। मूर ने कहा भी है कि अगर "अच्छा" कोई प्राकृतिक वस्तु हो, तो भी इस दोष के स्वरूप

या जाकृत में कोई अंतर नहीं आएगा सिर्फ इसका नाम उपयुक्त नहीं रह जाएगा। ऐसे में फिर इस दोष को "प्रकृतिवादी दोष" कहने की बजाय परिभाषा दोष कहना अधिक उपयुक्त हुआ होता।

"अच्छा" की अवधारणा की समीक्षा के अंतर्गत ~~…~~ मूर के अनुसार "अच्छा" की तुल्यार्थक शब्द द्वारा परिभाषा स्वनिर्मित परिभाषा और जो कि स्वनिर्मित से ज्यादा महत्वपूर्ण है, सूचनात्मक या कोशीय परिभाषा दी जा सकती है। इसलिए "अच्छा" को सीधे-सीधे "अपरिभाष्य" कहना भ्रामक हो सकता है।

मूर के अनुसार "परिभाषा" शब्द का सबसे महत्वपूर्ण अर्थ वह है जिससे उस वस्तु के वास्तविक चरित्र की जानकारी मिलती है, जिसके लिए अच्छा शब्द प्रतीक है। मूर के अनुसार इस किस्म की परिभाषा ऐसे ही शब्दों से दी जा सकती है, जो जटिल वस्तुओं का प्रतीक है, जैसे "घोड़ा"। क्योंकि "अच्छा" "पीला" की तरह एक सरल गुण का प्रतीक है इसलिए "अंगों में बांटने" के अर्थ में "अच्छा" की परिभाषा नहीं हो सकती है। फिर, क्योंकि 'अच्छा' की विश्लेषणात्मक परिभाषा नहीं दी जा सकती है (जबकि 'पीला' की दी जा सकती है) इसलिए मूर ने इसे "गैर-प्राकृतिक" मान लिया, जिसका कोई औचित्य नहीं है

"परिभाषा" का इस्तेमाल मूर ने जिस अर्थ में किया है, उस अर्थ में "अच्छा" की परिभाषा अर्थात् उसका प्राकृतिक चरित्र बतलाना वास्तव में सम्भव नहीं है। लेकिन इसका कारण वह नहीं है जो मूर ने समझाया है, क्योंकि "अच्छा" एक, सरल और "गैर-प्राकृतिक" गुण है बल्कि इसका कारण यह है कि "अच्छा" शब्द "घोड़ा" "पीला" या "सुन्दर" शब्द की तरह कोई वर्णनात्मक शब्द है ही नहीं। वह घोड़ा या पीला जैसी किसी जटिल या सरल वस्तु का प्रतीक नहीं है। यह मुख्यतः एक अवर्णनात्मक शब्द है, जिसका इस्तेमाल मुख्यतः अनुमोदन करने, या प्रशंसा करने के लिए होता है। जैसा कि हेयर ने कहा है अलग-अलग सन्दर्भों में "अच्छा" का वर्णनात्मक अर्थ अलग-अलग हो सकता है। इसलिए जिस अर्थ में मूर ने "परिभाषा" की परिभाषा की है उस अर्थ में "अच्छा" की परिभाषा खोजने का प्रयत्न ही एक भूल है असली दोष एक अवर्णनात्मक शब्द को वर्णनात्मक मानने का है जो मूर के चिन्तन में है। जिसे गिलबर्ट राइल ने "कोटि दोष" (category mistake) कहा है। इसका एक उदाहरण मान सकते हैं। और इसे अगर नीतिशास्त्र के क्षेत्र में एक खास नाम देना हो तो "वर्णनात्मक दोष" (descriptive fallacy

कह सकते हैं।

"प्रकृतिवादी दोष" के अतिरिक्त मूर ने भिन्न एक दोष की ओर ध्यान दिलाया है, अगर कोई एक गुण किसी वस्तु में है, तो उन दो अलग-अलग वस्तुओं को बिल्कुल एक मान लेना, जैसे "मैं सत्य हूँ" तो "मैं" और "सच्चाई" को बिल्कुल एक मान लेना या "नारंगी पीला है" तो "नारंगी" और "पीला" को एक मान लेना, यह वास्तव में एक दोष है, लेकिन ऐसे में उस आरोपित गुण को न तो सरल होने की जरूरत है न अपरिभाष्य। जैसे — अगर कोई कहे कि "हावड़ा ब्रिज एक कैंटिलीवर ब्रिज है" तो ऐसे में अगर "कैंटिलीवर ब्रिज" (Cantilever bridge) और "हावड़ा ब्रिज" को बिल्कुल एक मान लिया जाए तो यह भी एक दोष होगा, जबकि "कैंटिलीवर ब्रिज" न तो सरल है और न अपरिभाष्य।

मूर का यह कहना सही नहीं है कि नारंगी (फल) को पीला कहने का कोई अर्थ तभी है जबकि "नारंगी" और "पीला" अलग-अलग हों, या "सुख" को "अच्छा" कहने का कोई अर्थ तभी है [illegible] "सुख" और "अच्छा" अलग-अलग हों। (यह "त्रिकोण तीन भुजाओं वाली आकृति है" के उदाहरण से समझा जा सकता है) लेकिन, वास्तविकता यह है कि कुछ

सद्गुणों में "अच्छा" और "सुखद" समानार्थक होने के बाद भी ये दोनों शब्द बिल्कुल पर्यायवाची नहीं हैं। जब हम कहते हैं कि "सुख अच्छा है" तो हम वक्त हमारा यह अर्थ नहीं होता है कि "सुख सुख है", बल्कि हम सुख के प्रति अपनी पसंदगी व्यक्त कर रहे होते हैं, या यह कह रहे होते हैं कि "सुख प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए।" "अच्छा के बारे में सामान्य अन्वेषण" करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि भाषा के अधिकांश शब्दों की तरह "अच्छा" के भी कई अर्थ हैं, और अलग-अलग संदर्भों में इसके अलग-अलग अर्थ होते हैं।

मूर ने "प्रकृतिवादी दोष" को या अधिक सटीक कहें तो पर्यायवाची दोष को सुखवाद के विरुद्ध और खास तौर से मिल के विरुद्ध एक आधार के रूप में इस्तेमाल किया है। मूर ने स्वयं स्वीकार किया है कि इस दोष के बिना भी सुखवाद का समर्थन किया जा सकता है जैसा कि सिजविक ने किया है। अतः सुखवाद के खण्डन की दृष्टि से "प्रकृतिवादी दोष" का विशेष महत्व नहीं है।